लाल केला

सी.एन. अन्नादुरै

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

लाल केला

सी.एन. अन्नादुरै

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

ज्ञान विज्ञान प्रकाशन

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा देशभर में चलाए जा रहे *'जनवाचन आंदोलन'* के तहत आम जनता में पठन-पाठन संस्कृति विकसित करने के लिए है।

लाल केला *सी.एन. अन्नादुरै*	**Lal Kela** ***C.N. Annadurai***
कॉपी संपादक राधेश्याम मंगोलपुरी	***Copy Editor*** **Radheshyam Mangolpuri**
रेखांकन संदीप के. लुईस	***Illustration*** **Sandeep K. Louis**
ग्राफिक्स अभय कुमार झा	***Graphics*** **Abhay Kumar Jha**
कवर डिजाइन गॉडफ्रे दास	***Cover Design*** **Godfrey Das**
संस्करण 2018	***Edition*** **2018**
सहयोग राशि 24 रुपये	***Contributory Price*** **Rs. 24.00**
मुद्रण क्रिसेंट प्रिन्ट साल्युशन्स नई दिल्ली - 110 018	***Printing*** **Crescent Print Solutions** **New Delhi - 110 018**

Publication and Distribution

Gyan Vigyan Prakashan

C/o Bharat Gyan Vigyan Samiti

59/5, Third Floor, Ravidas Marg, Near K-Block Kalkaji , New Delhi - 110019

Phone : 011 - 26463324, Fax : 91 - 011 - 26469773

Email : bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com

BGVS JAN 2012 1K 1700 JVA 0034/2012

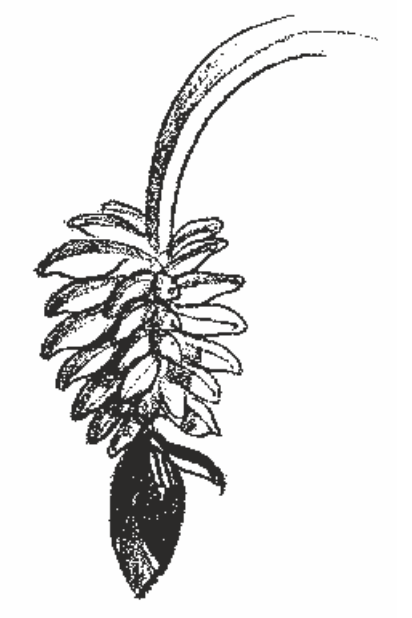

लाल केला

सी.एन. अन्नादुरै

लाल केला

सैंगोटन लाड़ले बेटे की तरह उस लाल केले के पौधे की परवरिश कर रहा था। दिन छिपे जब वह खेत से घर लौटता, खेत की सारी मेहनत भूलकर सीधे घर के पिछवाड़े जाकर देखता कि लाल केले के पौधे को पानी दिया गया है अथवा नहीं। वह तसल्ली हो जाने के बाद ही अपने बच्चों के पास आता, उनसे बातें करने बैठता। पौधे के बढ़ने के साथ-साथ उसकी छाती फूल उठती। पौधे को सींचते समय, उसके नीचे की कंकरीली मिट्टी को देखकर थाला बनाते समय, उसकी आंखें आनंद से विस्फारित-सी रहतीं। उसे इस पौधे को अपने बड़े बेटे करियन से भी ज्यादा प्यार देते देख विस्मित थी उसकी पत्नी कुप्पी और वह कुछ ईर्ष्या भी अनुभव करती थी।

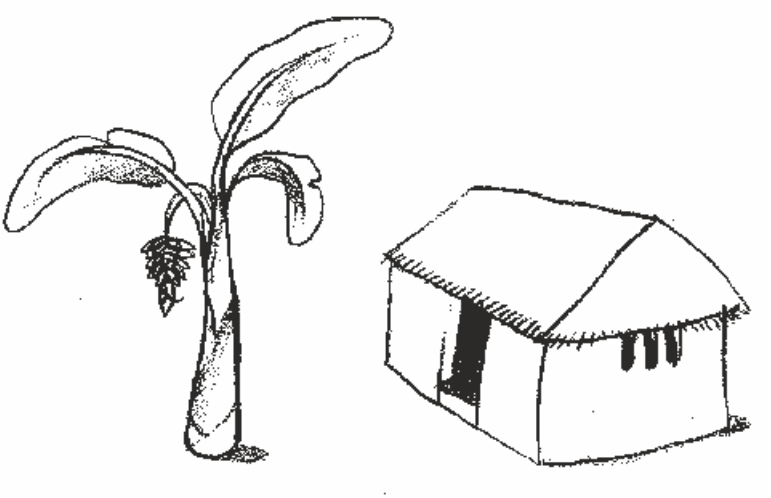

"कुप्पी, ढोर-डांगर पौधे को कुचल न दें, जरा नजर रखना। पौधा बड़ी बरकत देगा। लाल केला मामूली चीज नहीं है। कितना भारी तो इसका गुच्छा होगा, फल भी लम्बे और गोल होंगे। ऐसे स्वादिष्ट फल को तो देखते-देखते ही भूख मिट जाएगी," इतराता हुआ सैंगोटन अपनी पत्नी से कहता।

चारों बच्चे पिता की हां में हां मिलाते। इतना ही नहीं, वे पास-पड़ोस की झोंपड़ियों के बच्चों के बीच लाल केलों की चर्चा करते हुए अकड़ते फिरते। किसानों के बच्चे बातें करें भी और किसके बारे में! पिता की नई मोटर, अम्मा के नए हीरे के गहने अथवा बड़े भाई के खरीदे रेडियो-सेट के बारे में तो वे बातें कर नहीं सकते थे! लाल केले का पौधा ही उनके लिए मोटर, आभूषण, रेडियो– सभी कुछ था।

बड़ा लड़का करियन कहता– "गुच्छा तैयार होते ही एक पंजे भर फल मैं लूंगा।" सामने की झोंपड़ी का एल्लप्पन कहता– "क्या उसमें से एक भी मुझे नहीं देगा? क्या मैंने भी तुझे नहीं दिया था आम? और याद तो

कर, भुने हुए चने भी दिए थे।"

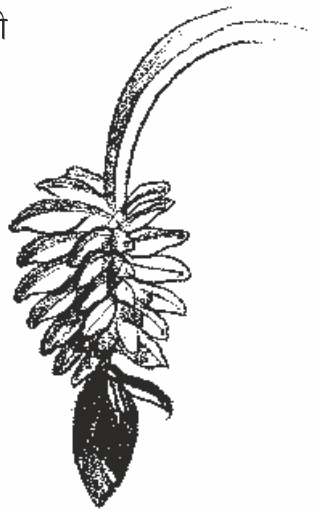

आंखें मिचमिचाती हुई करियन की छोटी बहन कहती– "तुम एक पंजा लोगे तो मैं दो लूंगी। एक मां से, दूसरा बाबा से," और शरारत-भरी नजर अपने भैया पर फेंकती।

तभी तीसरे नम्बर का मुत्तु कह उठता– "पंजे-भर केलों की रट लगाते-लगाते धोखा मत खा बैठना। किसे पता, केला पकने पर कोई कुछ कर न बैठे।" वह मजाक में यह बात नहीं कहता था। उसने निश्चय कर लिया था कि चोरी से ही सही, वह औरों से अधिक केले लेगा।

लाल केले का पौधा सैंगोटन का इतना सारा प्यार पाकर दिन-दूना रात-चौगुना बढ़ता जा रहा था। सैंगोटन सख्त मेहनत, मीरासदार (जमींदार) की ज्यादती, सब कुछ बरदाश्त कर लेता और लाल केले के पौधे को देखते ही सब कुछ भूल जाता। जब भी बच्चे रोते, लाल केले का पौधा दिखाकर ही उन्हें शान्त करता। शरारती बच्चों को डांटते समय भी लाल केले स्मरण किए जाते। वह कल्पना करता कि बच्चे लाल केलों को कितने चाव से खाएंगे। मीरासदार के बच्चे सेब आदि खाते हैं। करियन और मुत्तु को तो वे नसीब नहीं हो सकते। बच्चों को लाल केले खिलाकर तृप्त करने की अभिलाषा ने ही तो सैंगोटन को यह पौधा लगाने की प्रेरणा दी थी।

सैंगोटन था निरा किसान। कड़ी मेहनत करने पर भी बच्चों को देने के लिए फल और पकवान खरीदने लायक रुपये उसके पास कहां जमा हो पाते थे! मजदूरी में मिला धान पेट की आधी भूख ही बुझा पाता। कुप्पी ही की मजदूरी परिवार की उदरपूर्ति में सहायक रहती आई है। यही तो उनका जीवन है। उसकी मेहनत के फल का ज्यादातर हिस्सा खेत में ही काफूर हो जाता है। ज्यादातर अनाज मीरासदार के हिस्से में चला जाता है। यही एक लाल केला है, जिस पर लगी उसकी मेहनत का पूरा फल उसे ही मिलेगा। मीरासदार इसमें हिस्सेदार बनकर दखल देने नहीं आएगा। वह दिन-दिन भर खेत में काम करता रहा था। इसका सारा फल उसी के परिवार को मिलने वाला है, यह सोचकर वह प्रसन्न था।

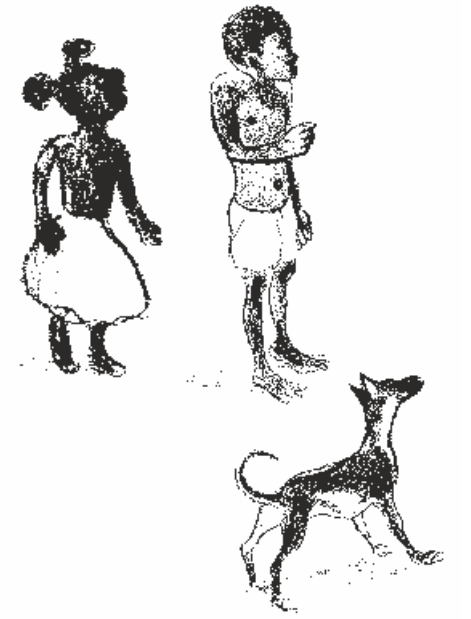

पौधा बढ़ता गया और उसके मन का निश्छल आनंद भी बढ़ने लगा। बच्चे अब लाल केले के पौधे के नीचे खेलने लगे थे। फूलों से औरतों को और शहद से भौरों को जो प्रेम या मोह होता है, वैसे ही मोहपाश में बच्चे बंध गए थे लाल केले से।

"एक महीने के अंदर फलियां निकल आएंगी न बाबा?" करियन बड़े उत्साह से पूछता।

"दो महीने लग जाएंगे, बेटे।" सैंगोटन का उत्तर होता। लाल केले के पौधे में फूल निकल आया, फिर फलियों के गुच्छे भी निकल आए। सैंगोटन की चाल में अब एक प्रकार की अक्कड़ दीखने लगी।

मीरासदार परंदामन मुदलियार ने अपनी पतोहू की कुंदन-काया की शोभा बढ़ाने वाले हीरे-जड़े गहनों को भी इतने अभिमान से न देखा होगा। सैंगोटन की आंखों में लाल केले की फलियां गहनों से भी मूल्यवान थीं। फलियां ज्यों-ज्यों बड़ी होती जातीं, बच्चों में आपसी तकरार भी बढ़ती जाती। अपने-अपने हिस्से के लिए माता या पिता के इजलास में शिकायतें पेश हो जातीं।

बच्ची पूछती, "फलियां कब आएंगी?"

"कितने दिनों तक फलियों को पेड़ पर ही रहने देंगे बाबा?" बालक पूछता। सैंगोटन चाहता था कि पकते ही फलियों को काट लें। घर में खूब पक जाने दें और तब बच्चों को खिला दें।

मेहनत का फल है, जो सारा-का-सारा ही भोग करेंगे। बीच में कोई दखल नहीं करेगा। निन्यानबे टका हिस्सा मांगने वाला शोषक

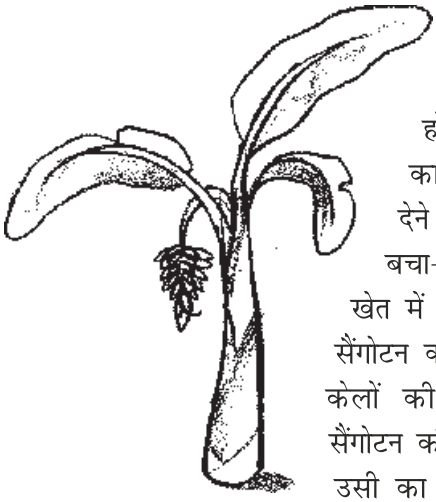

मीरासदार भी यहां कोई नहीं।

खेतों में तो मेहनत हमारी होने पर भी माल पर मीरासदार का हक है। उसका हिस्सा चुका देने के बाद जो रह जाए वही बचा-खुचा हमें लेने दिया जाता है– खेत में उग रहे लाल धान के बारे में सैंगोटन का यह विचार था। मगर लाल केलों की बात और ही थी। मेहनत सैंगोटन की है, मेहनत के फल पर भी उसी का हक है।

अब दो दिन में गुच्छा काटा जाने वाला था। बच्चे खुशी से उछलने लगे। पड़ोसी किसानों के बच्चों के कानों तक खबर पहुंच गई। फल के एवज में पेशगी के तौर पर चने, मूली, चिउड़ा आदि मिलते रहे।

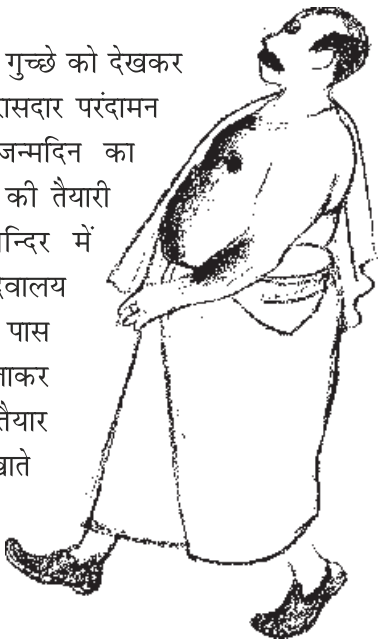

इधर सैंगोटन लाल केले के गुच्छे को देखकर प्रफुल्लित हो रहा था, उधर मीरासदार परंदामन अपनी पतोहू मुत्तुविजया के जन्मदिन का समारोह बड़ी धूमधाम से मनाने की तैयारी करने लगा था। देवी के मन्दिर में अभिषेक-आराधना की सूचना देवालय के अय्यर (ब्राह्मण पुजारी) के पास भेज दी गई। कारिंदे को बुलाकर आवश्यक समान की सूची तैयार करवाई गई। चीजों के नाम लिखाते समय फलों की भी बारी आई। मीरासदार ने दो दर्जन केले सूची में लिखने को कहा।

सुन्दरम कहने लगा– "अपने सैंगोटन के घर के पिछवाड़े में लाल केले का गुच्छा नजर आता है। माल बड़ा ही बढ़िया है। आप आज्ञा दें तो वही लाने…।"

मीरासदार ने स्वीकृति दे दी। सैंगोटन का लाल केले का गुच्छा उसके सुख-स्वप्न का प्रतीक था, उसी का मृत्यु-पत्र दिया सुन्दरम ने।

जब सैंगोटन और कारिंदा सुन्दरम गली में खड़े होकर बातें कर रहे थे, तब बच्चों ने यह नहीं सोचा था कि बातचीत लाल केलों के बारे में हो रही होगी। सैंगोटन का सिर चक्कर खाने लगा। जबान लड़खड़ाने लगी। शब्द उठते और गले में ही अटक जाते।

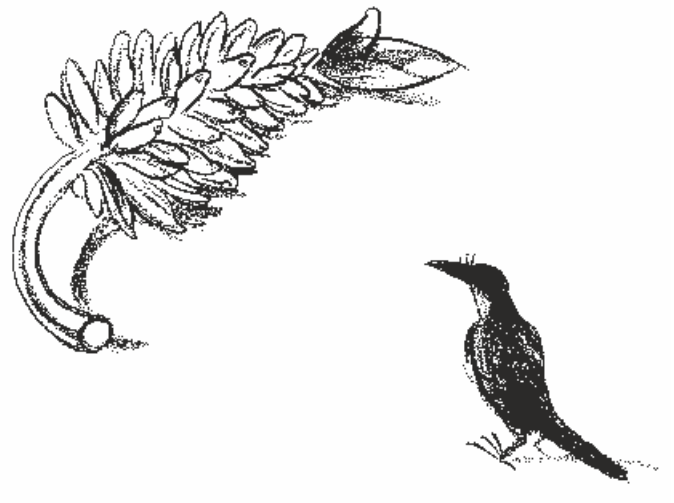

पतोहू के जन्म-दिवस की पूजा है- सुन्दरम ने कारण बताया। सैंगोटन कर ही क्या सकता था! केलों के साथ ही मन में पनपी-पली इच्छाएं, बच्चों के मुंह में भर आया पानी, आज और कल करके वे दिन गिन रहे हैं- यह बात वह कारिंदे से कैसे कह पाएगा? लाल केलों की फलियों से भरा हुआ गुच्छा! और उसका चाहने वाला बन गया था मीरासदार परंदामन। तू भी कितना ओछा था। तुझे आदमी समझकर कुछ मांगा गया और तूने ना कर दी! जिनका नमक खाता है, उन्हीं के

साथ विश्वासघात! केले का एक गुच्छा क्या चीज है! सैंगोटन मन की आंखों से देख रहा था। सारा गांव उस पर उंगली उठा रहा है।

"बाबा, आपने विश्वास दिलाया था और अब निराश कर रहे हैं!"

"मैंने भी पानी दिया था, गाय-भैंस से पौधे को बचाया था!"

"बाबा, तुमने कहा था न कि लाल केला बहुत मीठा होगा, मिसरी जैसा! बाबा, छोटी मचल रही है केले के लिए।"

"पैसे देकर बाजार से किसमिस या संतरे लाने को थोड़े ही हम कह रहे हैं। अपने घर के पिछवाड़े में पौधा लगाया था।" कलपते हुए बच्चे उसे अपने मन की आंखों के आगे दीख रहे थे। "इन बच्चों को तुम तड़पा रहे हो, यह कहां का न्याय है!" उसकी बीबी भी मानो कह रही थी।

सामने खड़ा था कारिंदा सुन्दरम। सैंगोटन मरी हुई चाल से उस

जगह पहुंचा, जहां कटार पड़ी हुई थी। बच्चे आनंद से नाच उठे। "बाबा केले का गुच्छा काटने जा रहे हैं।" सैंगोटन की आंखों में जल भर गया। गुच्छे को काटकर घर में लाया।

कटार नीचे पटक दी। "बाबा, नीचे रखो न। हम फलों को छूकर देखेंगे।" बच्चे जिद करने लगे। फिर जब उन्हें पता चला कि गुच्छा कारिंदे सुन्दरम को दे दिया जाएगा तो उनपर जैसे आसमान टूट पड़ा। सैंगोटन ने करियन की पीठ सहलाते हुए कहा– "एक ही महीने में दूसरे छोटे पेड़ में लाल गुच्छा लग जाएगा। रोओ मत। इसे हमारे मालिक मांग रहे हैं।" यह कहता हुआ वह घर से बाहर निकल गया। बड़ी रात गए उसे साहस हुआ घर लौटने का। रोते-रोते बच्चे नींद में बेसुध पड़े थे। सैंगोटन चटाई पर पड़ा करवटें बदलने लगा।

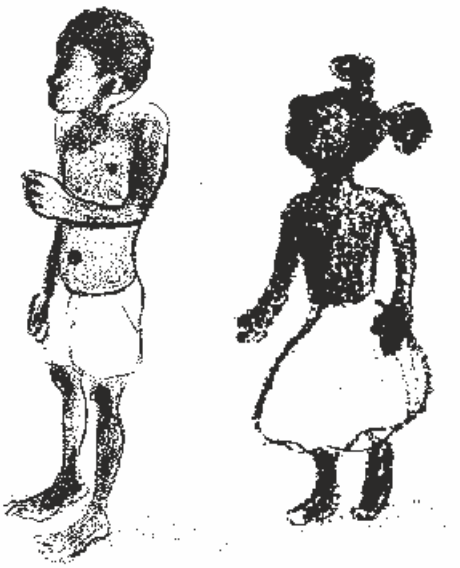

लाल केले के पौधे को बच्चे की तरह रखा था- क्या लाभ! मालिक के लिए कोई बड़ी बात नहीं थी-एक क्या, एक हजार गुच्छे वे जब चाहें खरीद सकते थे। मगर सैंगोटन? उस एक गुच्छे के लिए उसने कितना परिश्रम किया था। कितनी रातें बीती थीं इस गुच्छे के स्वप्न में··· बच्चों को हजारों बार केलों की आशा दिखाई थी और एक क्षण में सब कुछ कुचल दिया गया।

चार दिन बाद चांदी के थाल में एक दर्जन केले रखे हंसिनी की चाल से मुत्तुविजया मन्दिर में प्रविष्ट हुई।

चार दिन तक समझाने पर भी बच्चे रो-रो पड़ते थे। करियन अपनी हठ छोड़ता ही नहीं था। कुप्पी ने कहीं से एक पैसे का पुराना सिक्का निकालकर उसे दिया कि दुकान से एक फल खरीद ले। करियन के पैरों में जैसे पर लग गए। वह दुकान पर पहुंचा। दुकान में लाल केलों के पंजे रस्सी से लटक रहे थे। कारिंदे ने गुच्छा मीरासदार के यहां पहुंचाने से पहले ही चार पंजे गायब करके इस दुकान में बेच दिए थे। अपने घर के उन्हीं केलों के सामने दीन बनकर खड़ा था करियन।

"एक का एक आना लगता है रे! एक-एक पैसे में लाल केला मिलता है कहीं! जा, भाग यहां से!"

दुकानदार ने डांटकर भगा दिया। बेचारा करियन इस रहस्य को क्या जाने कि उसी के आंगन में उगे लाल केले दुकान की शोभा बढ़ा रहे हैं- अब भी वे उसके सामने हैं, मगर उसकी पहुंच से दूर। उस एक पैसे के भुने हुए चने खरीदकर वह चबाता हुआ उदास गति से

घर लौट आया। उसी समय सैंगोटन लाल केले के पेड़ को काटकर उसका स्तंभ बाहर ला रहा था।

"बाबा, यह भी मीरासदार के घर?" करियन ने पूछा।

"नहीं रे। यह पार्वती दीदी चल बसी न, उसके 'पाडे' (मण्डपाकार अर्थी) में बांधने के लिए दे रहा हूं," सैंगोटन ने उत्तर दिया।

अलंकृत 'पाडे' पर बंधा था लाल केले का स्तंभ। 'पाडे' के चारों ओर कुहराम मचा था। करियन और दूसरे बच्चे पीछे थे। करियन बड़े अभिमान से 'पाडे' को दिखाकर बोला– "वह हमारे घर के लाल केले का स्तंभ है।"

❐

जनवाचन आंदोलन

लाल केले के पौधे की परवरिश करते हुए सैंगोटन का पूरा परिवार खुश था कि उसके फल पर उनका हक होगा, किसी और का नहीं। जैसे-जैसे केले का पौधा बढ़ रहा था, वैसे-वैसे उनके सपने भी पंख लगाकर उड़ान भर रहे थे। लेकिन जैसे ही फल पककर तैयार हुआ कि ··· सैंगोटन के परिवार के सपनों का क्या हुआ? यह सब पढ़िए इस कहानी में।

सी.एन. अन्नादुरै (1900-1969) 1967 में तमिलनाडु के मुख्यमंत्री बने, परंतु 2 साल बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। वे द्रविड़ मुनित्र कड़गम (डी.एम.के.) पार्टी के जन्मदाता थे और बहुत जाने-माने लेखक, वक्ता और समाज सुधारक थे। पिछड़े वर्ग और दलितों को आगे बढ़ाने के एक बड़े आंदोलन के वे नेता थे। उन्होंने आजीवन अन्याय, शोषण और गैर-बराबरी के खिलाफ लड़ाई लड़ी।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति